नेताजी सुभाष चंद्र बोस पर निबंध | **Subhash Chandra Bose Essay 100 words**

हर साल की तरह इस साल भी नेताजी सुभाष चंद्र बोस(netaji subhash Chandra bose) के जन्मदिन को बड़े उत्साह के साथ मनाया जाएगा। साल 2022 में, सुभाष चंद्र बोस की जयंती रविवार को मनाई गई थी, वहीं इस साल 2023 में यह सोमवार को मनाई जाएगी। इस साल नेताजी के जन्म की 126वीं वर्षगांठ मनाई जाएगी। भारत देश को आजादी दिलाने में नेताजी सुभाष चंद्र बोस का अहम योगदान रहा है। उन्होंने अपने क्रांतिकारी कार्यों से भारत में आजादी के लिए लोगों में ज्वलंत नेतृत्व की भावना को बनाए रखा था।

उनके द्वारा बनाए गए संगठन ने देश के कई हिस्सों को अंग्रेजी हुकूमत से मुक्त कराने का अहम प्रयास किया था। अपने बेहतरीन कूटनीति के द्वारा उन्होंने यूरोप के कई देशों से संपर्क करके उनसे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सहयोग देने का प्रस्ताव रखे थे। नेताजी सुभाष चंद्र बोस भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी(mahatma Gandhi), जवाहर लाल नेहरू(Jawaharlal Nehru), लाला लाजपत राय, भगत सिंह(bhagat singh), चंद्रशेखर आजाद(Chandra shekhar azad) आदि जैसे प्रमुख क्रांतिकारियों में से एक थे।

सुभाषचंद्र बोस के बारे में निबंध | **Subhash Chandra Bose Essay 200 Words**

नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को बंगाल प्रांत(bangal residency) के उड़ीसा (odisha)प्रभाग के कटक शहर में हुआ था, इस दौरान पूरे भारत(india) में ब्रिटिश राज्य था। नेताजी(netaji) की माता का नाम प्रभावती देवी और पिता का नाम जानकीनाथ बोस था। इनके पिता पेशे से वकील थे और उन्हें रायबहादुर की उपाधि प्राप्त थी। जनवरी 1902 में सुभाष चंद्र बोस ने प्रोटोस्टेट यूरोपियन स्कूल में एडमिशन लिया था। इसके बाद इन्होंने रेनवेर्शा कॉलेजिएट स्कूल और फिर प्रेसिडेंसी कॉलेज में साल 1913 में मैट्रिक की परीक्षा में द्वितीय श्रेणी प्राप्त करने के बाद प्रवेश लिया ।

इनका राष्ट्रवादी चरित्र नेताजी की पढ़ाई के बीच में आ गया, जिस वजह से इन्हें स्कूल से निष्काषित कर दिया गया। इसके बाद इन्होंने स्कॉटिश चर्च कॉलेज(scottish church college) और फिर कैम्ब्रिज स्कूल में सिविल की परीक्षा में शामिल होने के लिए गए। इसके बाद उन्होंने सिविल परीक्षा(civil service) में चौथा स्थान प्राप्त किया, लेकिन इन्होंने ब्रिटिश सरकार के अधीन रहकर काम करने से मना कर दिया। अंत में सिविल की नौकरी से इस्तीफा दे दिया और भारत आ गए, जहां इन्होंने बंगाल प्रांत की (congress committee)कांग्रेस समिति के प्रमोशन के लिए स्वराज्य समाचार पत्र का प्रकाशन शुरू किया।

सुभाष चंद्र बोस पर निबंध

सुभाष चंद्र बोस का पढ़ाई में बहुत मन था। इन्होंने उच्च शिक्षा के लिए विदेशों तक का सफर किया और (civil service) सिविल सेवा में नौकरी तक की है। राष्ट्रवादी विचारधारा के चलते नौकरी तो छोड़ी ही इसके अलावा कई तरह की परेशानियों का डटकर सामना भी किया। 1937 में इन्होंने (Austria) आस्ट्रिया में एमिली शेंकल, जो कि एक पशु चिकित्सक की बेटी थी, के साथ शादी की थी।

सन 1920-30 के दौरान ये (Indian national congress) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेताथे और साल 1938-39 में इसके अध्यक्ष चुने गए थे। वो अखिल भारतीय युवा कांग्रेस के अध्यक्ष के साथ-साथ बंगाल राज्य के कांग्रेस के सचिव के तौर पर भी चुने गए थे। वो फॉर्वर्ड समाचार पत्र के संपादक बन गए और(Kolkata) कलकत्ता के नगर निगम के सी.ई.ओ. के रूप में कार्य किया और ब्रिटिश सरकार के द्वारा घर में ही नजरबंद कर दिए गए। फिर उन्होंने ब्रिटिश शासन (British rule) से भारत को आजाद कराने के लिए सहयोग के तौर पर जर्मनी और जापान तक की यात्रा की ।

आखरी में 22 जून 1939 को अपने राजनीतिक जीवन को फॉर्वर्ड ब्लॉक (forward block) से संयोजित कर लिया। मुथुरलिंगम थेवर इनके बहुत बड़े राजनीतिक समर्थक थे। इन्होंने मुंबई में एक विशाल रैली का आयोजन किया। साल 1941-43 तक ये बर्लिन में रहे। नेताजी ने “तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा” जैसे अपने प्रख्यात नारे के जरिए आजाद हिंद फौज का नेतृत्व किया । 6 जुलाई 1944 में इन्होंने अपने भाषण में महात्मा गांधी(mahatma Gandhi) को “राष्ट्रपिता” कहा था, जिसका प्रसारण सिंगापुर आजाद हिंद फौज के द्वारा किया गया था। उनका एक और प्रसिध्द नारा “दिल्ली चलो” आई.एन.ए. की सेनाओं को प्रोत्साहित करने के लिए था।